48. वीरेंद्र जैन के उपन्यासों मे महानगरीय जीवन

मुंढे सविता एकनाथ
डॉ. मंजूर सैय्यद, *के.टी.एच.एम. कॉलेज नासिक.*

महानगर: स्वरूप:– जनसाधारण की भाषा बडा नगर या बृहत नगर यह अर्थ है। अंग्रजी में 'मेट्रोपोलियन' शब्द है। गतीक भाषा के 'मेटर' और 'पोलित' शब्दो के संमिश्र पर यह अर्थ आधारित है। जिसके अर्थ के नुसार 'मातृनगर' शब्दार्थ है। 'मातृनगर' यह शब्द प्राचीन काल में स्त्री–जाति के विशेषाधिकार या मातृसत्ताक प्रणाली का अभिव्यंजक है, जो समयगन या संदर्भानुसार मूल अर्थ खोकर मातृप्रेम या उच्च राष्ट्रप्रेम में परिवर्तित हो गया है। लेकिन आज महानगर शब्द का प्रयोग अपने पूर्वप्रचलित अर्थ में नही होता है। समाजशास्त्र विश्वकोश में 'महानगर' शब्द का अर्थ है कि दो या दो से अधिक नगरों से बना एक ऐसा शहर जो कभी विस्तृत खेत खलिहानों के द्वारा। अलग–अलग छोटे–मोटे नगरो में बॅटा हुआ था। किंतु अब इनके बीच नगरीय बस्तियों के विकास ने इन्हे जोडकर महानगर में बदल दिया है। यह नगरो का नगर होता है। घनी जनसंख्या ऐसे नगर की प्रमुख विशेषता होती है। महानगरों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से ज्ञात होता है कि सर्वप्रथम ग्राम अस्तित्व में आए। कस्बा, नगर और ग्राम का सम्मिलित रूप है जिसके नगरीय गतिविधियॉ सचंलित होने लगती है। स्वाधीनता के बाद संस्कृति के उत्तरोत्तर विकास के परिणामस्वरूप गॉव कस्बे में नगर में और परिवर्तन होकर वह महानगर में परिवर्तित हो गए।

महानगर स्वरूप:– इन प्रक्रिया में युग की यंत्र–प्रविधि और औद्योगीकरण ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्नीसवी सदी में प्रथम महायुद्ध और फ्रांस राज्यक्रांति ने संपूर्ण विश्व को झकझोर दिया। संपूर्ण विश्व में इन घटनाओं के कारण उथल–पुथल मच गई। प्राचीन यातायात के साधन, उद्योग साधन कालबाहय हो गए।

औद्योगिक प्रगति का जाल फैलाने लगे। यातायात के साधन नव–नविन उद्योय, वैज्ञानियक प्रगति आदि ने देश का ढॉचा ही बदल दिया। नया मानवीय दृष्टीकोण नई वर्ग–व्यवस्था। नैतिकता का बदलता रूप ऐसे अनेक समस्याओं को जन्म देने लगा। जनसंख्या के भारी परिणाम में स्थानातरण के कारण गॉवो की अपेक्षा नगर–महानगर अधिक समस्याग्रस्त हो गए। गॉवो में परंपरागत पेशे का अस्तित्व खतरे में आया। उद्योग–धंधो में जीविका पाने के लिए शिक्षित ही नही, अशिक्षित एवं अल्पशिक्षित भी बड़े–बड़े नगरों की और दौड़े। गॉव और कस्बे का छोटा–मोटा दुकानदार भी थोडी बहुत जमापूँजी लेकर कारोबार चलाने के लए बडे–बडे नगरों की ओर आकर्षित हुआ। नागरीकरण तथा महानगरीकरण में औद्योगिकी करण यातायात और संचार के माध्यम आर्थिक राजनीतिक और सांस्कृतिक, गतिविधियॉ, गॉवो कस्बों का महानगरों की ओर आकर्षण आदि कई कारण सक्रिय सहयोग पहुँचाते है।

महानगर और यांत्रिकीकरण:– वर्तमान युग में नगर और नगर से महानगर की ओर मानव यात्रा चल रही है। नगरों की धूम–धाम, भीड, शोर–शराबा, वैभव–विलासिता, के अनेकानेकक साधनों को मानव ने निर्मित किया है। भीड–भरी सड़के यातायात के साधनों की धूँ–धूँ करी आवाज, मशीनों की जीवन–शोषी गुरहिट घटी के अनुशासन पर कार्य करने की विवशताने मनुष्य को चलती हुई मशीन पुरजा बना दिया है। महानगरों में एक

48. वीरेंद्र जैन के उपन्यासों मे महानगरीय जीवन

मुंढे सविता एकनाथ
डॉ. मंजूर सैय्यद, *के.टी.एच.एम. कॉलेज नासिक.*

महानगर: स्वरूप:— जनसाधारण की भाषा बडा नगर या बृहत नगर यह अर्थ है। अंग्रजी में 'मेट्रोपोलियन' शब्द है। गतीक भाषा के 'मेटर' और 'पोलित' शब्दो के संमिश्र पर यह अर्थ आधारित है। जिसके अर्थ के नुसार 'मातृनगर' शब्दार्थ है। 'मातृनगर' यह शब्द प्राचीन काल में स्त्री—जाति के विशेषाधिकार या मातृसत्ताक प्रणाली का अभिव्यंजक है, जो समयगन या संदर्भानुसार मूल अर्थ खोकर मातृप्रेम या उच्च राष्ट्रप्रेम में परिवर्तित हो गया है। लेकिन आज महानगर शब्द का प्रयोग अपने पूर्वप्रचलित अर्थ में नही होता है। समाजशास्त्र विश्वकोश में 'महानगर' शब्द का अर्थ है कि दो या दो से अधिक नगरों से बना एक ऐसा शहर जो कभी विस्तृत खेत खलिहानों के द्वारा। अलग—अलग छोटे—मोटे नगरो में बॅटा हुआ था। किंतु अब इनके बीच नगरीय बस्तियों के विकास ने इन्हे जोडकर महानगर में बदल दिया है। यह नगरो का नगर होता है। घनी जनसंख्या ऐसे नगर की प्रमुख विशेषता होती है। महानगरों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से ज्ञात होता है कि सर्वप्रथम ग्राम अस्तित्व में आए। कस्बा, नगर और ग्राम का सम्मिलित रूप है जिसके नगरीय गतिविधियॉ सचंलित होने लगती है। स्वाधीनता के बाद संस्कृति के उत्तरोत्तर विकास के परिणामस्वरूप गॉव कस्बे में नगर में और परिवर्तन होकर वह महानगर में परिवर्तित हो गए।

महानगर स्वरूप:— इन प्रक्रिया में युग की यंत्र—प्रविधि और औद्योगीकरण ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्नीसवी सदी में प्रथम महायुद्ध और फ्रांस राज्यक्रांति ने संपूर्ण विश्व को झकझोर दिया। संपूर्ण विश्व में इन घटनाओं के कारण उथल—पुथल मच गई। प्राचीन यातायात के साधन, उद्योग साधन कालबाहय हो गए।

औद्योगिक प्रगति का जाल फैलाने लगे। यातायात के साधन नव—नविन उद्योय, वैज्ञानियक प्रगति आदि ने देश का ढॉचा ही बदल दिया। नया मानवीय दृष्टीकोण नई वर्ग—व्यवस्था। नैतिकता का बदलता रूप ऐसे अनेक समस्याओं को जन्म देने लगा। जनसंख्या के भारी परिणाम में स्थानातरण के कारण गॉवो की अपेक्षा नगर—महानगर अधिक समस्याग्रस्त हो गए। गॉवो में परंपरागत पेशे का अस्तित्व खतरे में आया। उद्योग—धंधो में जीविका पाने के लिए शिक्षित ही नही, अशिक्षित एवं अल्पशिक्षित भी बड़े—बड़े नगरों की और दौड़े। गॉव और कस्बे का छोटा—मोटा दुकानदार भी थोडी बहुत जमापूँजी लेकर कारोबार चलाने के लए बडे—बडे नगरों की ओर आकर्षित हुआ। नागरीकरण तथा महानगरीकरण में औद्योगिकी करण यातायात और संचार के माध्यम आर्थिक राजनीतिक और सांस्कृतिक, गतिविधियॉ, गॉवो कस्बों का महानगरों की ओर आकर्षण आदि कई कारण सक्रिय सहयोग पहुँचाते है।

महानगर और यांत्रिकीकरण:— वर्तमान युग में नगर और नगर से महानगर की ओर मानव यात्रा चल रही है। नगरों की धूम—धाम, भीड, शोर—शराबा, वैभव—विलासिता, के अनेकानेकक साधनों को मानव ने निर्मित किया है। भीड—भरी सड़के यातायात के साधनों की धूँ—धूँ करी आवाज, मशीनों की जीवन—शोषी गुरहिट घटी के अनुशासन पर कार्य करने की विवशताने मनुष्य को चलती हुई मशीन पुरजा बना दिया है। महानगरों में एक

ओर आकाश की ऊँचाई के साथ होड करनेवाले महल खडे है। तो दुसरी और गंदी–बस्तियॉ अपना डेरा जमाकर स्थित है। मध्य वर्ग तथा निम्न वर्ग आवास–समस्या से तंग आ चुका है। महानगरी जीवन पर पश्चिमी संस्कृति हावी हो रही है। पश्चिमी संस्कृति के देखा–देखी अनुकरण से युवक युवतियॉ के सबंधों में काफी बदलाव आया है। नैतिक मुल्यों की तिलांजली सरेआम हो रही है। होटल–क्लब संस्कृति द्वारा पश्चिमी संस्कृति भारतीय संस्कृति पर हावी हो गई है। वहॉ सभी प्रकार की नैतिकता का खलन हो गया है। बढती जनसंख्या के अनुपात में रोजगार उपलब्ध नही है। अंत: बेरोजगारी की समस्या के भस्मासुर ने अनेकों को आतंकित कर दिया है। आज महानगरीय जीवन अनेक समस्याओं से गुजर रहा है। सच तो यह है कि महानगरीय जीवन स्वयं एक समस्या हो गया है। वीरेंद्र जैन ने स्वयं महानगरीय जीवन को नजदीक से देखा, सहा और भोगा है। उन्होंने अपने लघु उपन्यासों में महानगरीय समाजजीवन को उद्घाटित किया गया है।

आवास समस्या:– महानगरों में आवास की समस्या ने विकराल रूप धारण किया है। महानगरों की घनी जनसंख्या,औद्योगीकी करण, गॉवो और कस्बों को महानगरों की ओर आकर्षण, वर्गभेद आदि कई कारण हैं, जिन के फलस्वरूपव महानगरो में इमारतों के जाल उन की बगलों में गंदी–सडी बस्तियों ने अपना डेरा जमाया है। 'प्रतिदान' लघु उपन्यास में नरेन शादी के शहर रहने आता है। अपनी प्रभा भी उसके साथ रहती हैं। नरेन को कंपनी कि तरफ से एक कमरे का घर भाडे पर मिला था, वह दोनो रह रहे थे लेकिन बाद नरेन की अम्मा दो भाई, बहन भी नरेन के यहॉ रहने आते है। नरेन को बहुत त्रासदी हो रही थी लेकिन वह लोग गुजारा कर रहे थे। महानगरों में एक वर्ग ऐसा हैं, जिन्हे सिर छिपाने के लिए जगह नहीं है। तीसरा वर्ग निम्न तथा मध्य है। जो परेशानियो से त्रस्त है। औद्योगिकीकरण के कारण वहॉ बस्तियों के लोगों स्वस्थ, स्वच्छ, जीवन नही जीने देता है। वहॉ गंदगी के कारण शारीरिक स्वस्थता नही रहती।

यातायात के साधन और प्रदुषण:– महानगरों में जनसंख्या का सभी समस्याओं का मुल होती है। आज हमारे देश में कामकाजी वर्ग की यातायात के साधनों के द्वारा ध्वनीप्रदुषण की समस्या निर्मित हो रही है। वीरेंद्र जैन के लघु उपन्यासों में दिल्ली शहर का दर्शन हुआ है। दिल्ली यह राजधानी का महानगर है। पुरे भारत देश में आज दिल्ली शहर में, ध्वनी, वायु प्रदषण में अव्वल है। बढती स्कूटरों, मोटर साइकिलों मोपेडों और कारों की बढती हुई संख्या यातायात समस्या को और अधिक खराब होती जा रही है। दिल्ली, मुंबई, कोलकाता जैसे महानगरों में यातायात के साधनो कि समस्या तेजी से बढ रही है। सुरेखा –पर्व, लघु उपन्यास में विद्या भी दिल्ली शहर के अनाथालय रहती थी। उसे भी इन समस्याओं का सामना करना पडता है। अनातीत लघू उपन्यास में विजय, सुषमा दिल्ली में काम करते थे।

महानगर की ओर युवाओं का अकार्षण और रोजगार:– महानगरों में बढती बेरोजगारी की समस्याने विकृत रूप धारण किया हैं। आज गॉवो में जमीन के टुकडे हो रहे है, जिससे गुजारा होना कठिन हो गया है। लोग रोजगार के लिए नगरों की ओर दौडने लगे है। मशीनों के प्रयोग के कारण ग्रामीण उद्योगो का ऱ्हास हो रहा है। वह रोजगार पाने के लिए शहर आते हैं, लेकिन उन्हे बेरोजगारी का सामना करना पडता है। सुरेखा–पर्व, लघु उपन्यास में विनय पूर्वज जमीन के बॅटते–बॅटते अनीगनत हिस्सों मे बॅट गऐ थे। इसलिए विनय के चाचा शहर रोजगारी के